

दुधारू पशुओं में लंपी रोग से बचाव एवं नियंत्रण

विजय चंद्रा¹, प्रदीप कुमार², राम गोपाल³

परिचय:

गाय और भैंस जैसे दुधारू पशु किसानों की आय का महत्वपूर्ण साधन हैं। पशु स्वस्थ रहेगा तो दूध उत्पादन भी अच्छा रहेगा और किसान को नियमित आमदनी होती रहेगी। लेकिन पशुओं में होने वाली संक्रामक बीमारियां किसान के लिए बड़ी परेशानी और आर्थिक नुकसान का कारण बन सकती हैं। ऐसी ही एक बीमारी है लंपी रोग, जिसे अंग्रेजी में Lumpy Skin Disease (LSD) कहा जाता है। लंपी रोग मुख्य रूप से गायों में होने वाली एक वायरस से फैलने वाली बीमारी है। इस बीमारी में पशु को बुखार आता है और शरीर की त्वचा पर जगह-जगह कठोर गांठें बनने लगती हैं। बीमारी बढ़ने पर पशु कमजोर हो सकता है, चारा कम खाता है और दूध उत्पादन में काफी कमी आ सकती है। कुछ पशुओं में पैरों में सूजन, चलने में परेशानी और प्रजनन से जुड़ी समस्याएं भी हो सकती हैं। अच्छी बात यह है कि समय पर सावधानी बरतकर लंपी रोग के फैलाव और नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

लंपी रोग क्या है?

लंपी रोग एक वायरस के कारण होता है। यह बीमारी मुख्य रूप से गायों में देखी जाती है। संक्रमित पशु से दूसरे पशु में यह बीमारी मक्खी, मच्छर और खून चूसने वाले

दूसरे छोटे कीड़ों के माध्यम से फैल सकती है। बीमार पशु के शरीर से निकलने वाले पदार्थ, दूषित सामान और संक्रमित पशुओं की आवाजाही से भी बीमारी फैलने का खतरा रहता है। लंपी रोग मनुष्यों में बीमारी नहीं फैलाता, लेकिन पशुओं के स्वास्थ्य और किसान की आय को काफी प्रभावित कर सकता है।

लंपी रोग के लक्षण कैसे पहचानें?

पशुपालक अपने पशुओं पर रोज ध्यान दें। निम्न लक्षण दिखाई देने पर सावधान हो जाना चाहिए।

- ❖ पशु को अचानक तेज बुखार हो सकता है। वह सुस्त रहने लगता है और चारा-पानी कम कर देता है।
- ❖ पशु की त्वचा पर गोल और कठोर गांठें बनने लगती हैं। ये गांठें गर्दन, पीठ, पेट, पैरों और थन के आसपास दिखाई दे सकती हैं। यह लंपी रोग की सबसे खास पहचान है।
- ❖ बीमारी के दौरान पशु कम चारा खाता है और कमजोर हो जाता है। इसका सीधा असर दूध उत्पादन पर पड़ता है और दूध पहले की तुलना में काफी कम हो सकता है।
- ❖ कुछ पशुओं के पैरों में सूजन और दर्द हो सकता है। इससे पशु को चलने में परेशानी होती है और वह अधिक

¹विजय चंद्रा, ²प्रदीप कुमार, ³राम गोपाल

¹सह-प्राध्यापक (पशु विज्ञान), ²विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी),

³वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र, महाराजगंज,

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, 224229

समय तक बैठा या लेटा रह सकता है।

- ❖ बीमार पशु की आंखों या नाक से पानी अथवा अन्य प्रकार का स्राव निकल सकता है।
- ❖ कुछ समय बाद त्वचा की गांठों में घाव हो सकते हैं। इन घावों पर मक्खियां बैठने से परेशानी बढ़ सकती है।
- ❖ बीमारी ज्यादा बढ़ने पर पशु का वजन कम हो सकता है और वह बहुत कमजोर दिखाई देने लगता है।
- ❖ गंभीर बीमारी का असर पशु की प्रजनन क्षमता पर भी पड़ सकता है। इसलिए बीमारी को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

लंपी रोग कैसे फैलता है?

लंपी रोग को फैलाने में मक्खी और मच्छर जैसे खून चूसने वाले कीड़े महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जब कोई कीड़ा बीमार पशु का खून चूसता है और फिर स्वस्थ पशु को काटता है, तो बीमारी के फैलने का खतरा रहता है। इसके अलावा

- ❖ बीमार और स्वस्थ पशुओं को एक साथ रखने से।
- ❖ एक ही सामान का कई पशुओं में उपयोग करने से।
- ❖ बीमार पशु को दूसरे गांव या बाजार में ले जाने से।
- ❖ बाहर से आने वाले लोगों और वाहनों से।
- ❖ गंदे और नमी वाले पशु आवास से।

लंपी रोग से बचाव कैसे करें?

पशुओं को समय पर टीका लगवाएं

लंपी रोग से बचाव में टीकाकरण सबसे महत्वपूर्ण उपायों में से एक है। अपने क्षेत्र में पशुपालन विभाग द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण अभियान के बारे में जानकारी लें और पात्र पशुओं को समय पर टीका लगवाएं। टीका कब और किस पशु को लगाना है, इसकी जानकारी पशु चिकित्सक या पशुपालन विभाग के कर्मचारी से लें।

मक्खी-मच्छरों को नियंत्रित करें

पशुशाला में मक्खी और मच्छर कम रखना बहुत जरूरी है। इसके लिए

- ❖ गोबर को नियमित रूप से हटाएं।
- ❖ पशुशाला में गंदगी जमा न होने दें।
- ❖ आसपास पानी जमा न होने दें।
- ❖ नालियों की नियमित सफाई करें।
- ❖ पशुशाला में हवा और रोशनी की उचित व्यवस्था रखें।
- ❖ पशु चिकित्सक की सलाह से मक्खी-मच्छर भगाने के उचित उपाय करें।
- ❖ सिर्फ पशु पर दवा छिड़कना पर्याप्त नहीं है। पशुशाला और उसके आसपास की सफाई भी जरूरी है।

बीमार पशु को अलग रखें

यदि किसी पशु में बुखार और शरीर पर गांठें दिखाई दें तो उसे तुरंत दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें। बीमार पशु को

- ❖ बाजार न ले जाएं।
- ❖ दूसरे गांव या फार्म में न ले जाएं।
- ❖ स्वस्थ पशुओं के साथ न रखें।
- ❖ अलग बर्तन से पानी और चारा दें।
- ❖ साथ ही जल्द से जल्द पशु चिकित्सक को जानकारी दें।

नए पशु को तुरंत झुंड में न मिलाएं

नया पशु खरीदने के बाद उसे तुरंत पुराने पशुओं के साथ रखने के बजाय कुछ समय अलग रखकर उसके स्वास्थ्य पर नजर रखें। यदि पशु में बुखार, गांठ या अन्य बीमारी के लक्षण दिखाई दें तो पशु चिकित्सक से जांच कराएं।

पशुशाला को साफ रखें

पशुशाला की साफ-सफाई बीमारी से बचाव का बहुत आसान और प्रभावी तरीका है। रोजाना गोबर और गंदगी हटाएं। फर्श को साफ और यथासंभव सूखा रखें। पानी और चारे के बर्तन नियमित रूप से धोएं। बीमार पशु के उपयोग में आए सामान को साफ किए बिना स्वस्थ पशुओं के लिए इस्तेमाल न करें।

इलाज में सावधानी जरूरी

लंपी रोग वायरस से होने वाली बीमारी है। इसलिए ऐसी कोई एक दवा नहीं है जो इसे तुरंत खत्म कर दे। इलाज का मुख्य उद्देश्य पशु को कमजोरी से बचाना, बुखार और दर्द को कम करना तथा त्वचा के घावों की देखभाल करना होता है। यदि घाव में दूसरी तरह का संक्रमण हो जाए तो पशु चिकित्सक उसकी स्थिति के अनुसार दवा दे सकते हैं। पशुपालक स्वयं से कोई इंजेक्शन या दवा न दें। गलत दवा या गलत मात्रा पशु के लिए नुकसानदायक हो सकती है।

पशुपालक इन गलतियों से बचें

- ❗ लंपी रोग के समय कुछ सामान्य गलतियां बीमारी को और फैलाने का कारण बन सकती हैं।
- ❗ बीमार पशु को बेचने के लिए बाजार न ले जाएं।

- ❗ बीमार और स्वस्थ पशुओं को एक साथ न रखें।
- ❗ बिना पशु चिकित्सक की सलाह के दवा या इंजेक्शन न दें।
- ❗ घाव पर तेज रसायन या कोई अज्ञात घरेलू पदार्थ न लगाएं।
- ❗ मृत पशु को खुले में न फेंकें।
- ❗ बीमारी की जानकारी छिपाएं नहीं।
- ❗ बीमार पशु की अनावश्यक आवाजाही न करें।



चित्र: लम्पी रोग प्रभावित गाय

निष्कर्ष

लंपी रोग दुधारू पशुओं के लिए गंभीर परेशानी पैदा कर सकता है और इसका सीधा असर किसान की आमदनी पर पड़ सकता है। लेकिन थोड़ी सावधानी और सही पशुपालन व्यवस्था अपनाकर इसके नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। पशुपालक अपने पशुओं का नियमित निरीक्षण करें, समय पर टीकाकरण कराएं, पशुशाला को साफ रखें, मक्खी-मच्छरों को नियंत्रित करें और बीमार पशु को तुरंत अलग करें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर घरेलू उपचार या स्वयं दवा देने के बजाय तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।